२३: प्रतिपादन-५ : सतर्कता सामाजिकता

दिनांक - १६/१०/२०११

सतर्कता सहित मानवीयतापूर्ण सामाजिकता ही मानवीयता का प्रतिपादन का महत्त्वपूर्ण भाग है | साथ में सतर्कता सहित संज्ञानीयतापूर्ण, सजगता सहित देव मानवीयता जागृत मानव परम्परा का पुष्टि है, यह प्रतिपादन है | मानव सदा से यथार्थ का पक्षधर, सुखी होने का इच्छुक होना पाया गया है | यह ज्ञानी, अज्ञानी, विज्ञानी, गरीबी, अमीरीपूर्वक जीता हुआ मानव में देखने को मिलता है | मानव ने जंगल युग से ही सुखी होने का प्रयास किया है | इसमें प्रधान बात यही रही कि जीव चेतना में जीते हुए जीवों से अच्छा जीने का प्रयास किया है | सन २००० तक अधिकांश मानव जीवों से अच्छा जीने का प्रमाण प्रस्तुत किया है | इसके बावजूद सुखी होने का आकांक्षा रही, वह अधूरा ही रह गया |

इसके मूल कारण में यह देखने को मिला कि जीव चेतनावश मानव अपराधों को वैध मानता गया | अपराधपूर्वक सुखी होना बनता ही नहीं | विधि का अध्ययन नहीं हो पाया अथवा प्रमाण परम्परा नहीं बनी इसलिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | सुखी होने का विधि को जागृत मानव ही मानवीय आचार संहिता रुपी संविधान को प्रस्तुत किया है | मानवीयता ही मानव का स्वत्व है, जिससे स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकारपूर्वक जीना बनता है | यही जागृत चेतना है | चेतना विकासपूर्वक ही अथवा अध्ययनपूर्वक ही जागृतिपूर्वक जीना बन पाता है, नहीं तो भ्रमित रहना ही बन पाता है | भ्रमित मानव के लिये भ्रमित व्यवस्था बनना सहज रहा | भ्रमवश ही सभी अपराधों को वैध मानना बनता है | भ्रमित मानव विधा के लिये इस वर्तमान में भी अत्याधुनिक विज्ञान विधि से शिक्षित करते समय लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद ही प्रधान है | इस बात पर ध्यान देने पर लगता है कि मानव सुखी होने के अर्थ में ही अथवा आशय से ही शिक्षा प्रदान करता है | जबकि तीनों प्रकार के उन्मादी शिक्षा से मानव और दुखी, और दुखी होने के लिये बाध्य है | इसी कारणवश इससे मुक्ति पाने के लिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रस्तावित है | इस शिक्षा विधि से अर्थात चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से ही स्वयं में विश्वास, पूरा अस्तित्व में विश्वास होना होता है | स्वयं का वैधता का अधिकार विश्वास ही है | वैधता का अधिकार स्पष्ट होने में समाधान होना पाया जाता है | समाधान स्वयं में सुख रूप में अनुभव है | दूसरे भाषा से सुख का कार्य रूप समाधान है | कार्य रूप को मानव पहचानने में सुगमता है |

अनुभव को पहचानने के लिये कार्य रूप ही है जिसको अनुभवमूलक कार्य रूप कहा जाता है | इस क्रम में मानव अनुभवमूलक विचार रूप को भी पहचानता है और अनुभवमूलक व्यवहार को भी पहचानता है | इस प्रकार अनुभव मूलक विचार, कार्य, व्यवहार को पहचानना मानव परम्परा में सम्भव है | आदर्शवाद के अनुसार अनुभव अनिर्वचनीय है | भौतिकवाद के अनुसार अनुभवों से लेन देन नहीं है या अनुभव से परहेज है | इस आधार पर सह-अस्तित्ववादी विधि से अनुभव को ज्ञानगोचर बताया है तथा कार्य को ज्ञानगोचर, दृष्टिगोचर दोनों बताया है | कार्य से अर्थात आचरण से अनुभव को पहचानना बन पाना ही ज्ञानगोचर, दृष्टिगोचर का मतलब है | मानव परम्परा सदा सदा से स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान करना ही चाहता

रहा है | मानव में निहित पाँच महिमा में से रूप, पद, धन, बल का अनुभव किया या पहचाना और उसमें श्रेष्ठता को भी पहचाना | जैसा ज्यादा अच्छा रूपवान- कम रूपवान, ज्यादा बलवान-कम बलवान, ज्यादा धनवान-कम धनवान, ज्यादा पदवान –कम पदवान | ज्यादा पदवान का तात्पर्य ज्यादा बल सम्पन्नता –कम बल सम्पन्न होने के रूप में समुदायों को पहचाना गया है | केवल बुद्धि के रूप में पहचानना अभी सम्भव नहीं हो पाया | ऊपर कहे चार प्रकार के अर्थ में ही बुद्धि को समझा जा रहा है | प्रतिभा को समझा जा रहा है | इस ढंग से मानव भ्रमित होने की पद्धति समझ में आती है | मानव कितना भी युद्ध करे, संघर्ष करे लेकिन सुख, शांति में जीने का पक्षधर यथावत बना रहता है | इस तथ्य को समझने के बाद ही जीवन एवं बौद्धिकता को समझने की अपेक्षा बनता है | अभी वही समय है क्योंकि धरती बीमार हो गई है, प्रदूषण छा गई है | सकल अवैधता को वैध मानने लगा है | इन सभी स्थितियों से पता लगता है कि दीर्घकाल से मानव अच्छाई के लिये ही प्रयत्न किया है, घटित होना शेष रहा है | इसके मूल में अच्छाइयां ध्रुवीकरण नहीं हो पाना ही रहा | अच्छाइयों का ध्रुवीकरण स्वयं में विश्वास, अस्तित्व में विश्वास होने पर ही होता है | यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रस्ताव का लोकव्यापीकरण होने से पाया जाता है |

स्वयं में विश्वास होने के क्रम में सहअस्तित्व को समग्रता के रूप में अध्ययन करना, स्वीकारना होता है | सह-अस्तित्व में यह देखा गया है कि व्यापक वस्तु में समाहित जड़-चैतन्य प्रकृति ही है | यही सम्पूर्ण अस्तित्व है | यह प्रकृति विभिन्न स्तरों में कार्यरत है | इस विधि से किसी धरती को चारों अवस्था से सम्पन्न, किसी धरती को तीन अवस्था से सम्पन्न, किसी धरती को दो अवस्था से सम्पन्न, किसी धरती को एक अवस्था में सम्पन्न होना पाया जाता है | यह चारों अवस्थायें क्रम से पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था ही हैं | किसी धरती में चारो अवस्था स्वयं में व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना ही विकास क्रम-विकास, जागृति क्रम –जागृति सहज ज्ञान है | मानव ज्ञानावस्था में होने का सार्थकता इसी बिंदु में पाया गया कि मानव जितने भी प्रयत्न करे, अन्ततोगत्वा सुखी होने की इच्छा रहता ही है | इसे भली प्रकार से उचित, अनुचित रूप से जीता हुआ व्यक्तियों के संवाद से भी पता चलता है | अतएव यह निश्चय होता है कि मानव संज्ञानीयतापूर्वक सुखी हो पाता है | भ्रम, अपराध से सुखी नहीं हो पाता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत